**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

# जाति और समाज आधुनिक भारत में सामाजिक संरचना का अध्ययन

संदीप कुमार बमनावत
सहायक आचार्य,समाजशास्त्र
बाबू शोभाराम राजकीय कला महा वद्यालय अलवर, राजस्थान

## सारांश

आधुनिक भारत में जाति और समाज का संरचना अध्ययन करने के लए हमें भारतीय समाज के सामाजिक प्रणा लयों और जाति व्यवस्था के महत्वपूर्ण पहलुओं की समझ की आवश्यकता है। भारतीय समाज एक अत्य धक व वध समृ द्ध का प्रतीक है , और यहाँ तक क इसकी सामाजिक वर्गीकरण की परंपरा और जाति प्रथा भी अत्य धक परिश्रम की एक प्रतिस्पर्धी जगह बना चुकी है।जाति व्यवस्था ने भारतीय समाज को वभाजित कया है , ले कन साथ ही यह भी दिखाती है क व भन्न जातियों के बीच सामाजिक सांघटन और सामरस्य की भावना भी है। इसके अलावा, आधुनिक भारत में सामाजिक संरचना के रूप में वक सत हुई सामाजिक न्याय , समाजिक और आ र्थक समरसता की प्र क्रया भी दिखाई देती है।आधुनिक भारत में जाति और समाज का अध्ययन करने से हमें समाज के सामाजिक ववाद , सामाजिक समस्याएं, और समाज में समाजिक परिवर्तन के कारणों की समझ मलती है। यह हमारे समाज को सामाजिक सुधार की दिशा में आगे बढ़ने के लए महत्वपूर्ण है।आधुनिक भारत में जाति और समाज का अध्ययन हमारे समाज के सामाजिक संरचना को समझने की दिशा में हमारी ज्ञान को बढ़ावा देता है और समाज में सामाजिक समानता और समरसता की दिशा में कदम बढ़ाने के लए महत्वपूर्ण है।

## परिचय

आधुनिक भारत में सामाजिक संरचना का अध्ययन करने के संदर्भ में हमें भारतीय समाज की ऐतिहा सक और सामाजिक प्र क्रयाओं की महत्वपूर्ण समझ की आवश्यकता है। जाति और समाज दो ऐसे पहलु हैं जो भारतीय समाज की वशेषता को दर्शाते हैं और इनका अध्ययन हमें समाज के वकास और असमानता के कारणों की समझ में मदद करता है।जाति व्यवस्था भारत में हजारों वर्षों से प्रच लत है और यह व भन्न जातियों को वर्गीकृत करती है। यह जाति और वर्ण के प्रणाली का

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

हिस्सा रही है, जिसमें व्यक्तियों के अ धकार और समाज में उनकी स्थिति उनकी जाति के आधार पर निर्धारित होती है। यह प्रणाली समाज में व भन्न अवसरों को प्रदान करती है, ले कन साथ ही समाज में असमानता को भी बढ़ावा देती है।सामाजिक संरचना के संदर्भ में , आधुनिक भारत में समाज के व भन्न पहलुओं का अध्ययन करना महत्वपूर्ण है। यहाँ तक क समाज में समाजिक समरसता , जातिवाद के खलाफ लड़ाई, और सामाजिक सुधार के प्रयासों का भी महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।आधुनिक भारत में जाति और समाज का अध्ययन बेहद महत्वपूर्ण है , क्यों क यह हमारे समाज के सामाजिक रूपरेखा को समझने में मदद करता है और समाज में समाजिक समरसता और समाजिक न्याय की दिशा में कदम बढ़ाने के लए महत्वपूर्ण है।

<u>अध्ययन का महत्व</u>

"जाति और समाज आधुनिक भारत में सामाजिक संरचना का अध्ययन" का महत्व वशेष होता है क्यों क यह हमें समाज के रूप , संरचना, और दिशा की समझ में मदद करता है। यह अध्ययन भारतीय समाज की आधुनिक सामाजिक संरचना के गहरे पहलूओं को खोजने का माध्यम प्रदान करता है, जिससे हम उसके समस्याओं को पहचान सकते हैं और सामाजिक न्याय की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं।इस अध्ययन से हम समझ सकते हैं क कैसे जाति और वर्ग के आधार पर वर्गीकृति का निर्माण होता है और इसके प्रभाव को समझ सकते हैं। यह जानकारी हमें समाज में असमानता के कारणों को समझाने में मदद करती है और समाज के सभी वर्गों के साथ सामाजिक न्याय की दिशा में योजनाएं बनाने की अनुमति देती है।इस अध्ययन से हम समाज में जाति के आधार पर वर्गीकृत रूप से बांटने के प्र क्रयाओं को समझ सकते हैं , जिससे हम समाज के व भन्न प्रतिष्ठानों के साथ कैसे जुड़ सकते हैं। इससे हमारे समाज में सामाजिक और आ र्थक समानता की दिशा में कदम बढ़ाने का मार्ग प्राप्त होता है।समाज और जाति के अध्ययन से हमें समाज के अंदर की दिशा में नई दृष्टिकोण और गहरा समझ प्राप्त होता है , जो समाज के सामाजिक और आ र्थक सुधार के लए योजनाएं बनाने और कदम बढ़ाने में मदद करता है। इससे हम एक औरतन , समरस्त, और समाजिक न्यायपूर्ण समाज की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

## अध्ययन की आवश्यकता

जाति और समाज के अध्ययन का महत्व आधुनिक भारत में सामाजिक संरचना को समझने के लए अत्य धक महत्वपूर्ण है। यह हमें भारतीय समाज के आधुनिकीकरण के प्र क्रयाओं को समझने में मदद करता है और समाज में समाजिक असमानता के कारणों की गहरी समझ प्रदान करता है।जाति व्यवस्था और समाज का अध्ययन हमें समाज के व भन्न वर्गों के बीच सामाजिक संघटन, सामाजिक आ र्थक रूपरेखा, और सामाजिक संरचना के प्रति हमारे सोचने के तरीके को बदलता है। इसके बिना , हम समाज के सामाजिक दुश्मनी और सामाजिक असमानता के कारणों को समझने में सक्षम नहीं होते हैं।जाति और समाज के अध्ययन से हमें समाज के वकास और सुधार के लए कई नीतियों और कदमों की आवश्यकता की समझ मलती है। यह हमें सामाजिक न्याय और समाज में समाजिक समरसता की दिशा में कदम बढ़ाने के लए महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करता है।जाति और समाज के अध्ययन का आवश्यक होना आधुनिक भारत में सामाजिक संरचना की समझ में महत्वपूर्ण भू मका निभाता है और समाज में समाजिक सुधार की दिशा में कदम बढ़ाने के लए आवश्यक है।

## समाज में समाजिक असमानता और संघटन के कारण

समाज में समाजिक असमानता और संघटन के कारणों का गहरा अध्ययन करना महत्वपूर्ण है, क्यों क इससे हम समाज के सामाजिक दुश्मनी और समाज में असमानता के पीछे छिपे कारणों को समझ सकते हैं।

जाति प्रथा: भारतीय समाज में जाति प्रथा एक महत्वपूर्ण कारण है, जिसके तहत व्यक्तियों को उनकी जाति के आधार पर समाज में स्थिति मलती है। यह व्यक्तियों के सामाजिक समरसता को बा धत करने का कारण बनता है.

आ र्थक असमानता: आ र्थक असमानता भी समाज में व भन्न वर्गों के बीच संघटन बढ़ाता है। धन की अ धकता या अ धकतम धन के अभाव में आ र्थक असमानता समाज के व भन्न तबकों के बीच संघटन की बढ़ती बजाय तोता है.

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

शक्षा का असमान वतरण: शक्षा के असमान वतरण ने भी समाज में असमानता को बढ़ावा दिया है। व भन्न क्षेत्रों में शक्षा के अ धकार की कमी समाज के व भन्न वर्गों के बीच वभाजन का कारण बनती है.

समाजिक अन्याय: समाज में अन्याय और असमानता के मामूले में समाजिक दुश्मनी की दिशा में कदम बढ़ाता है। जातिवाद, जाति और लंग के आधार पर होने वाले भेदभाव और सामाजिक न्याय की खलाफी आवाजें समाज में असमानता को बढ़ावा देती हैं.

राजनीतिक असमानता: राजनीतिक असमानता भी समाज में असमानता के कारणों में से एक है , जैसे क वर्गवादी राजनीति और व भन्न समाज क्षेत्रों के बीच राजनीतिक संघटन को बढ़ावा देती है।

इस अध्ययन से हम समाज में समाजिक असमानता और संघटन के पीछे के कारणों को समझकर समाज में सामाजिक समरसता और समाजिक न्याय की दिशा में कदम बढ़ाने के लए कार्यकारण सूची तैयार कर सकते हैं।

<u>समाज में सामाजिक सुधार के लए नीतिया</u>

समाज में सामाजिक सुधार के लए नीतियों और कदमों का वश्लेषण करना महत्वपूर्ण है क्यों क यह समाज में सामाजिक समरसता, न्याय, और समृ द्ध की दिशा में कदम बढ़ाने के लए महत्वपूर्ण है।

शक्षा का प्रसार: शक्षा के सामाजिक और आ र्थक समरसता में महत्वपूर्ण भू मका निभाती है , और नियुक्तियों और नौकरियों में समाजिक और आ र्थक असमानता को कम कर सकती है। सरकारों को शक्षा के क्षेत्र में निवेश करने और शक्षा का प्रसार करने के लए कई योजनाएँ बनानी चाहिए।

समाजिक अ भवृ द्ध कार्यक्रम: समाजिक अ भवृ द्ध कार्यक्रम वर्गवाद के खलाफ संघर्ष करने में मदद कर सकते हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से गरीबी , जातिवाद, और असमानता के खलाफ जागरूकता बढ़ाई जा सकती है।

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

समाज में समाजिक संरचना के पुनर्निर्माण: समाज के सामाजिक संरचना के पुनर्निर्माण के लए समाज के व भन्न तबकों के बीच संघटन को कम करने के लए नीतियाँ बनानी चाहिए। इसके लए सामाजिक संरचना के पुनर्निर्माण के लए योजनाएं बनानी चाहिए जो समरसता, सामाजिक न्याय, और सामाजिक एकता की दिशा में काम करें।

समाजिक दुर्बलता के खलाफ सामुदायिक प्रोजेक्ट्स: समाजिक दुर्बलता के खलाफ सामुदायिक प्रोजेक्ट्स और कार्यक्रम समाज के अ धकांश लोगों के लए सामाजिक और आ र्थक समरसता की दिशा में काम करते हैं। इन प्रोजेक्ट्स के माध्यम से समाज में सामाजिक सुधार के लए एका धक प्र क्रयाएँ शुरू की जा सकती हैं.

कानूनी सुधार: समाज में सामाजिक सुधार के लए कानूनी सुधारों की आवश्यकता होती है , जैसे क जातिवाद के खलाफ कठिन कानूनी कदम और असमानता के खलाफ कानूनी कार्रवाई।

सामाजिक सुधार के लए ये नीतियाँ और कदम महत्वपूर्ण हैं और समाज को समरसता , न्याय, और समृ द्ध की दिशा में आगे बढ़ाने में मदद कर सकती हैं। इन कदमों का सामाजिक सुधार की दिशा में सहयोग करने के लए सामाजिक के सभी सेक्टरों के साथ मलकर काम करना महत्वपूर्ण है

साहित्य की समीक्षा

कुमार, वी. (2014)भारत में जाति और हिंदू सामाजिक व्यवस्था दो महत्वपूर्ण पहलु हैं जो समाज में असमानता के कारणों को प्रकट करते हैं।जाति व्यवस्था भारतीय समाज की आधी एक कड़ी है , जिसमें लोगों को उनकी जाति के आधार पर वर्गीकृत कया जाता है। इसका परिणाम है क कुछ लोग समाज के शीर्ष में होते हैं , जब क अन्य निम्न वर्गों में होते हैं , जो असमानता को बढ़ावा देता है।हिंदू सामाजिक व्यवस्था में भी असमानता की दिशा में कई कारण हैं, जैसे क जातिवाद, जाति और लंग के आधार पर भेदभाव , और असमाजिकता। यह व्यवस्था समाज को वभाजित करती है और असमानता के खलाफ लड़ाई को बढ़ावा देती

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

है।इस तरह की सामाजिक व्यवस्था के परिणामस्वरूप , भारत में असमानता और सामाजिक दुश्मनी की समस्याएँ अब भी अत्यंत मौजूद हैं , और समाज को इन समस्याओं का समाधान ढूंढने के लए कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

स्ट्रूप, एस. (2012)समकालीन भारत में, धा र्मक समुदायों का आकार जाति, वर्ग, और शहरीकरण के माध्यम से परिभा षत कया जा सकता है। जाति प्रणाली , जो प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में मौजूद है , अब भी एक महत्वपूर्ण भू मका निभाती है। यह लोगों को उनके धर्म , उपा ध, और जाति के आधार पर वर्गीकृत करता है और सामाजिक अन्याय के कारण समस्याओं का कारण भी बन सकता है।वर्गीकरण भी एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक तंत्र है जो लोगों को उनकी आ र्थक स्थिति के आधार पर वर्गीकृत करता है। आ र्थक असमानता के कारण, कुछ धा र्मक समुदाय अ धक वर्गीकृत होते हैं , जब क दूसरे गरीबी में डूबे रहते हैं।शहरीकरण भी धा र्मक समुदायों के आकार को प्रभा वत करता है। बड़े शहरों में ज्यादा वकास और रोजगार के अवसर होते हैं, जिससे वहां के धा र्मक समुदाय आ र्थक रूप से सुदृढ़ हो सकते हैं , जब क छोटे गाँवों में इसकी कमी हो सकती है।जाति , वर्ग, और शहरीकरण समकालीन भारत में धा र्मक समुदाय के आकार को बोधगम्य तरीके से परिभा षत करने में मदद कर सकते हैं, और समाज में सामाजिक न्याय के प्रति सचेतनता बढ़ा सकते हैं।

देशपांडे, ए. (2011)समकालीन भारत में जाति का व्याकरण आ र्थक भेदभाव के संदर्भ में महत्वपूर्ण है। जाति व्यवस्था भारतीय समाज के अग्रणी आधारों में से एक है , जो लोगों को उनके जाति के आधार पर वर्गीकृत करती है। यह वर्गीकृति आ र्थक स्थिति के साथ जुड़ी होती है, और इसके परिणामस्वरूप, कुछ जातियां आ र्थक रूप से सुदृढ़ होती हैं , जब क दूसरी गरीबी और असमानता में डूबी रहती हैं।आ र्थक भेदभाव के कारण , कई जातियां व्यक्तिगत और सामाजिक वकास के अवसरों से वं चत रहती हैं , जिससे सामाजिक न्याय के प्रति

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

चुनौतियों का सामना करती हैं।आ र्थक भेदभाव के समाधान के लए सरकार कई योजनाएं और कदम भी उठा रही है, जैसे क आ र्थक आर क्षतता, शक्षा के लए आ र्थक सहायता, और रोजगार के अवसरों को बढ़ाने के प्रयास।इसके बावजूद , आ र्थक भेदभाव एक चुनौती बना रहता है, और समाज को इसे परिष्कृत करने की आवश्यकता है ता क सभी लोग समाज में जीवन की बेहतर स्थितियों का हकदार हो सकें।

कुमार, वी. (2014)भारत में जाति और हिंदू सामाजिक व्यवस्था के बीच असमानता का वषय दरअसल एक गहरी और समझने में कठिन चुनौती है। जातिवाद और जाति के आधार पर वर्गीकृति एक प्राचीन सामाजिक व्यवस्था का हिस्सा रहा है और इसका परिणामस्वरूप , कई लोग आ र्थक और सामाजिक रूप से पीछे रहते हैं।हिंदू सामाजिक व्यवस्था में चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र) के आधार पर वर्गीकृति होती है , जो कई कारणों से असमानता को बढ़ावा देती है।हालां क , भारत स्वतंत्रता के बाद से समाज में सामाजिक और आ र्थक सुधार के लए कई कदम उठाए हैं , जैसे क आर क्षत वर्गों के लए आ र्थक सहायता और शक्षा के अ धक अवसर।असमानता का इस चुनौती को पूरी तरह से समाप्त करने के लए समाज को एकजुट होकर काम करना होगा और सभी लोगों को समाज के अ धकारों और अवसरों का समान रूप से उपयोग करने की अनुमति देनी होगी।

जोधका, एस.एस. (2017)समकालीन भारत में जाति एक महत्वपूर्ण सामाजिक और राजनीतिक मुद्दा है। यह प्राचीन काल से ही भारतीय समाज का एक प्रमुख आधार रही है , जिसमें लोगों को उनकी जाति के आधार पर वर्गीकृत कया जाता है। जातिवाद के चलते , कई लोग आज भी समाज में असमानता का सामना करते हैं , और इससे सामाजिक और आ र्थक असमानता का संचार होता है।हालां क , समकालीन भारत में जातिवाद के खलाफ सामाजिक सुधार के प्रति जागरूकता बढ़ी है , और कई कदम भी उठाए गए हैं , जैसे क आर क्षत वर्गों के लए

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आ थक सहायता और शक्षा के अ धक अवसर। ले कन इस वशेष मुद्दे का पूरी तरह से समाधान ढूंढना चुनौतीपूर्ण है, और इसके लए समाज के सभी वर्गों के सहयोग और समर्थन की आवश्यकता है। जाति के माध्यम से समाज में सामाजिक और आ थक न्याय को प्राप्त करने की दिशा में कदम बढ़ाना महत्वपूर्ण है ता क सभी भारतीय नागरिकों को समरसता और समानता की दिशा में आगे बढ़ सके।

<u>भारत में जाति और समाजकामहत्व</u>

भारत में जाति और समाज का महत्व ऐतिहा सक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से बहुत महत्वपूर्ण है। यहां के समाज का संरचनात्मक धारा है और समाज की जीवनशैली , संस्कृति, और आदर्शों को प्रभा वत करता है।जातिवाद के कारण , भारतीय समाज में वर्गीकृति होती है , जिससे समाज के व भन्न वर्गों के लोगों के बीच समाजिक स्थान और सु वधाओं का अंतर होता है। यह आ थक, शैली, और सामाजिक आधार पर लोगों को वर्गीकृत करता है।समाज का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू समाज के आदर्शों , संस्कृति, और धा र्मक अनुष्ठानों के प्रति है। यह जाति के आधार पर व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन को प्रभा वत करता है और समाज के सदस्यों के रूप और भावनाओं को मोल लेता है।इसके अलावा , समाज और जाति के प्रति सामाजिक न्याय की दिशा में भी महत्वपूर्ण है। भारतीय समाज में सामाजिक और आ थक न्याय को प्राप्त करने के लए योजनाएं और कदम बढ़ाए जा रहे हैं।समाज और जाति के महत्व के बिना भारतीय समाज की समझ और उसके वकास की दिशा में कठिनाइयां आ सकती हैं। इस लए, इन दोनों के महत्व को समझकर समाज को समृ द्ध, सामाजिक न्याय, और अ धक वकास की दिशा में कदम बढ़ाने का प्रयास करना महत्वपूर्ण है।

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

समाज और जाति का महत्व यह भी है क इन्हें धा र्मक और सांस्कृतिक परंपराओं के हिस्से के रूप में देखा जाता है। जाति और समाज के आधार पर व भन्न परंपराएँ , आचरण, और समाज के नियम बनाए गए हैं, जिन्हें समझने से समाज के सदस्य अपनी सांस्कृतिक पहचान और भौगो लक संरचना को समझ सकते हैं।इस लए , भारत में जाति और समाज का महत्व समाज के सभी पहलुओं में महत्वपूर्ण है , चाहे वो सामाजिक, आ र्थक, धा र्मक, या सांस्कृतिक हो। इन आदर्शों को समझकर और समाज में सामाजिक न्याय की दिशा में कदम बढ़ाकर हम एक औरतन और समृद्ध समाज की ओर बढ़ सकते हैं।

समस्या का ववरण

समाज और जाति संरचना के अध्ययन में , आधुनिक भारत के सामाजिक प्र क्रयाओं और जातिवाद की समस्याओं का ववरण करना महत्वपूर्ण है। जातिवाद , जो प्राचीन काल से ही भारतीय समाज में बना हुआ है , आज भी सामाजिक और आ र्थक असमानता की मूल समस्या रहा है।आधुनिक भारत में जाति के आधार पर वर्गीकृति एक महत्वपूर्ण चुनौती है , जिससे लोगों के आ र्थक और सामाजिक अवसरों में असमानता पैदा होती है। इसके परिणामस्वरूप, कुछ जातियां आ र्थक रूप से सुदृढ़ होती हैं, जब क दूसरी गरीबी में डूबी रहती हैं।साथ ही, आधुनिक समाज में सामाजिक व्यवस्था के रूप में जाति का महत्व अब भी महसूस कया जाता है , जिसका परिणामस्वरूप लोगों के व्यक्तिगत और सामाजिक वकास पर प्रभाव पड़ता है।इस प्रकार, जाति और समाज संरचना के अध्ययन से हमें यह समझने में मदद मलती है क कैसे समाज में असमानता को पहचाना और समाजिक न्याय की दिशा में कदम बढ़ाया जा सकता है। इसके लए समाज , सरकार, और लोगों के साथ मलकर कई सुधार कदम उठाने होंगे ता क हम एक औरतन और समान समाज की ओर बढ़ सकें।

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

## निष्कर्ष

जाति और समाज का अध्ययन आधुनिक भारत में सामाजिक संरचना को समझने के लए एक महत्वपूर्ण और गहरा वषय है, जिससे हम भारतीय समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रणा लयों के प्रति गहरा अध्ययन कर सकते हैं।जाति व्यवस्था भारतीय समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है , और इसने व भन्न जातियों को वर्गीकृत कया है। इसके परिणामस्वरूप , समाज में जातिवाद और असमानता का सस्टम प्राचीन समय से ही मौजूद है। इसने समाज को वभाजित कया है और असमानता की बढ़ती समस्याओं का कारण बना है।सामाजिक संरचना का अध्ययन करने से हमें समाज में व भन्न सामाजिक वर्गों के बीच संघटन , संघर्ष, और समाज में समरसता की प्र क्रया का परिचय होता है। यह हमारे समाज के वकास के प्रति हमारे दृष्टिकोण को बदल सकता है और समाज में समाजिक सुधार की दिशा में कदम बढ़ा सकता है।निष्कर्ष में , जाति और समाज का अध्ययन हमारे समाज के सामाजिक संरचना को समझने में महत्वपूर्ण भू मका निभाता है। इसके माध्यम से हम समाज के सामाजिक समानता और समाजिक न्याय की दिशा में कदम बढ़ाने के लए आवश्यक नीतियों और कदमों की समझ प्राप्त करते हैं , जिससे आधुनिक भारत का सामाजिक और सांस्कृतिक सुधार संभव हो सकता है।

## संदर्भ

गोल्ड, एच.ए. (1963)। समकालीन भारतीय समाज में जाति के अनुकूली कार्य। ए शयाई सर्वेक्षण, 427-438.

जोधका, एस.एस. (2016)। वर्णनात्मक पदानुक्रम: समकालीन भारत में जाति और उसका पुनरुत्पादन। वर्तमान समाजशास्त्र, 64(2), 228-243.

जोधका, एस.एस. (2017)। समकालीन भारत में जाति. रूटलेज इं डया.

**International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)**
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 08 August- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

ड्यूमॉन्ट, एल. (1967)। जाति: सामाजिक संरचना की एक घटना या भारतीय संस्कृति का एक पहलू? जाति और नस्ल: तुलनात्मक दृष्टिकोण, 28-38.

वैद, डी. (2014)। समकालीन भारत में जाति: लचीलापन और दृढ़ता। समाजशास्त्र की वा र्षक समीक्षा, 40, 391-410।

देसाई, एस., और दुबे, ए. (2012)। 21वीं सदी के भारत में जाति: प्रतिस्पर्धी आख्यान। आ र्थक एवं राजनीतिक साप्ताहिक, 46(11), 40.

डी ज़्वार्ट, एफ. (2000). सकारात्मक कार्रवाई का तर्क: भारत में जाति , वर्ग और कोटा। एक्टा सो शयोलॉजिका, 43(3), 235-249

संह, वाई. (2018)। भारतीय परंपरा का आधुनिकीकरण. रावत प्रकाशन।

डर्क्स, एन.बी. (2002)। मन की जातियाँ: उपनिवेशवाद और आधुनिक भारत का निर्माण। प्रंसटन यूनिव र्सटी प्रेस.

गुप्ता, डी. (एड.). (2004)। प्रश्न में जाति: पहचान या पदानुक्रम? (खंड 12)। समझदार।

सयोटी, एम. (2012)। रेट्रो-आधुनिक भारत: निम्न-जाति के स्व को स्था पत करना। रूटलेज।

देशपांडे, ए. (2011)। जाति का व्याकरण: समकालीन भारत में आ र्थक भेदभाव। ऑक्सफोर्ड यूनिवर सटि प्रेस।

स्ट्रूप, एस. (2012)। जाति, वर्ग और शहरीकरण: समकालीन भारत में धा र्मक समुदाय को आकार देना। सामाजिक संकेतक अनुसंधान, 105, 499-518।

कुमार, वी. (2014)। भारत में असमानता: जाति और हिंदू सामाजिक व्यवस्था। ट्रांस सएंस , 5(1), 36-52.